मौर्य काल की आर्थिक स्थिति

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

मौर्य काल की आर्थिक स्थिति के अंतर्गत इस काल खंड के कृषि, उद्योग एवं व्यापार-वाणिज्य की दशा को समझा जा सकता है| मौर्यकाल की अर्थव्यवस्था केंद्रीकृत अर्थव्यवस्था थी|

मौर्य काल की अर्थव्यवस्था में कृषि की दशा

मौर्य काल की अर्थव्यवस्था में कृषि मुख्य व्यवसाय था. कृषकों की आर्थिक स्थिति काफी बेहतर थी. यहां तक की राज्य की आय का मुख्य स्त्रोत भी कृषि से प्राप्त राजस्व था.

मौर्य काल में दो तरह की भूमि होने का पता चलता है एक देवमात्रक एवं दूसरा अदेवमात्रक. वर्षा पर आधारित भूमि को देवमात्रक एवं सिंचाई के कृत्रिम साधनों पर आधारित कृषि भूमि को अदेवमात्रक कहा जाता था.

इस समय भूमि अत्यंत उपजाऊ थी. मुख्यतः धान, गेहूं, जौ, साग-सब्जी आदि का उत्पादन किया जाता था. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कृषि से संबंधित क्रियाओं का विस्तृत वर्णन मिलता है.

कृषि स्वतंत्र किसानों द्वारा किये जाने के साथ-साथ राज्य द्वारा भी करवाया जाता था. राज्य द्वारा खेती करवाए जाने वाले भूमि को सीताभूमि कहा जाता था. इससे संबंधित अधिकारी सीताध्यक्ष कहलाते थे.

मेगास्थनीज के अनुसार मौर्य काल में भारत में कही भी अकाल नहीं पड़ा. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्ष में बोई जाने वाली तीन प्रकार की फसलों का उल्लेख मिलता है. इसमें चावल को सबसे अच्छा एवं गन्ने की खेती को सबसे कम महत्वपूर्ण बताया गया है.

मौर्य काल की अर्थव्यवस्था में उद्योग की दशा

मौर्य काल की अर्थव्यवस्था में कृषि के साथ ही उद्योग धंधो का भी विकास हुआ. इस समय कुछ उद्योग पर राज्य का पूर्ण नियंत्रण था जैसे की शराब, जहाजरानी, अस्त्र-शस्त्र , नमक, खानों की खुदाई, सिक्का निर्माण, जंगल आदि. कुछ उद्योग पर राज्य एवं निजी दोनों का अधिकार था.

वस्त्र उद्योग मौर्य काल का प्रमुख उद्योग था. वस्त्र उद्योग के प्रमुख केंद्र मदुरा, अपरांगत, कलिंग, काशी, वंग, वत्स तथा माहिष्मती आदि था. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में 6 प्रकार के मदिरा का उल्लेख मिलता है. इसके लिए राज्य द्वारा सूराध्यक्ष की नियुक्ति होती थी. इस काल में लौह उद्योग, चर्म उद्योग आदि भी उन्नत दशा में था.

व्यापार-वाणिज्य की स्थिति

मौर्यकाल की आर्थिक स्थिति में व्यापार वाणिज्य पर राज्य का कड़ा नियंत्रण था. माप-तौल का नियमित तौर पर राजकीय कर्मचारियों द्वारा निरीक्षण किया जाता था.

देशी वस्तुओं पर 5% एवं आयातित वस्तुओं पर 10% विक्रय कर वसूल किया जाता था. कर अवमानना के संबंध में कड़े दंड यहाँ तक की मृत्युदंड तक का प्रावधान था. व्यापार वाणिज्य से संबंधित सर्वोच्च अधिकारी पण्याध्यक्ष होता था.

मौर्य काल में आंतरिक एवं बाह्य दोनों तरह के व्यापार होते थे. व्यापार विशेष तौर पर जलमार्ग से किया जाता था. बाह्य व्यापार सीरिया, मिस्त्र, चीन एवं पश्चिम एशिया आदि के साथ किया जाता था.

मौर्य काल में मुद्रा के निर्माण एवं संचालन पर राज्य का पूर्ण अधिकार था. इस समय के आहत सिक्के बड़ी संख्या में प्राप्त हुए है. ये सिक्के सोने-चांदी तथा तांबे के बने हुए है.

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी विभिन्न प्रकार के सिक्को, पण, सुवर्ण, माषक आदि का उल्लेख मिलता है. अगर कोई व्यक्ति जाली सिक्का बनाता या किसी के पास से जाली सिक्का बरामद होता था तो उस पर भारी जुर्माना लगाया जाता था.

स्पष्ट है की मौर्यकाल की अर्थव्यवस्था केंद्रीकृत अर्थव्यवस्था थी|